आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी विचारधारा की प्रासंगिकता एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. रूपम कुमारी*

सार–संक्षेप

आचार्य नरेन्द्रदेव 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ के तीन दशकों में रूसी क्राँति के अनन्य प्रशंसक रहे, जहाँ लेनिनवाद की हिंसा तथा संघर्ष की तकनीक भारत में महात्मा गाँधी की पूर्ण अहिंसात्मक नीति से कहीं प्रभावशाली रही थी। गाँधीवादी विधियॉ दो–दो सविनय अवज्ञा आन्दोलनों के असफल हो जाने के कारण क्षीण हो रही थी। इन दो तकनीकों के द्वन्द में सही तकनीक चुनने की दुविधा में आचार्य जी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जब रूस की तरह पिछड़े आर्थिक दशावाला देश मार्क्सवादी लेनिनवादी तकनीक अपनाकर प्रगति के पथ पर तीव्रता से अग्रसर हो सकता है तो भारत में भी वैसा होना सम्भव है। इस प्रकार आचार्य जी भारत के आर्थिक विकास के लिए गाँधीवादी तकनीक के स्थान पर मार्क्सवादी लेनिनवादी तकनीक अपनाने पर जोर देते थे। आचार्य जी यह स्वीकार करते थे कि ''पुरानी आर्थिक प्रणाली का नाश करके उसके स्थान पर नयी आर्थिक प्रणाली कायम करना एक ऐसी घटना है, जो कि मामूली सुधारवाद के रास्ते से नहीं हो सकती। समाज के ढाँचे में आधारभूत परिवर्तन की ऐतिहासिक आवश्यकता क्रॉन्ति द्वारा ही पूर्ण हो सकती है। पर वे सुधार को क्रान्ति का आवश्यक अंग समझते हैं तथा नूतन समाजवादी समाज के निर्माण के लिए संघर्ष के साथ ही क्रान्तिकारी रचनात्मक कार्य भी आवश्यक समझते हैं। आचार्य जी के व्यक्तित्व की विशेषता इस बात में है कि वे जीवन के अन्तिम समय तक अपने विचारों में सामाजिक क्रान्ति के प्रबल समर्थक रहे तथा उनके चिन्तन में प्रतिक्रियावाद के लिए कोई स्थान नहीं है। उनके व्यक्तित्व में मौलिक चिन्तन की क्षमता है तथा वे मार्क्सवादी लेनिनवादी विचारों में नवीन सूत्र जोड़ने की क्षमता रखते हैं। इसीलिये कहा जाता है कि उन्होंने मार्क्सवाद लेनिनवाद को भारतीय संस्कार देने का सत्कार्य किया।

परिचय

आचार्य नरेन्द्र देव प्रजातांत्रिक समाजवाद के प्रणेता माने जाते हैं, तथा उन्हें भारतीय समाजवाद के जनक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने एक तरफ महान शिक्षा शास्त्री, राजनीतिक चिन्तक तथा सामाजिक चिन्तक के रूप में अपने को स्थापित किया तो दूसरी तरफ मार्क्सवाद के गहन अध्ययन और मनन के आधार पर स्वतंत्र भारत के आर्थिक विकास के लिए भी अपना स्वतंत्र विचार प्रस्तुत करने का प्रयास किया। प्रसिद्ध समाजशास्त्री डी.बी. मुखर्जी ने संघर्ष के नरेन्द्र देव अंक में अपना विचार प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि ''मेरी राय में वह मार्क्सवादी से अधिक लेनिनवादी थे तथा फिर भी वह स्टालिनवादी नहीं थे। वे मार्क्स, एन्जेल्स, लेनिन तथा विभिन्न पार्टियों के थीसिसों को उचित ऐतिहासिक संदर्भ में उदधृत कर सकते थे। उस ऐतिहासिक भावना ने मेरी राय में उनके मार्क्सवाद और ऐतिहासिक लेनिन वाद के अनुभव को बढ़ाया1। इस प्रकार स्पष्ट है कि आचार्य नरेन्द्र देव ने मार्क्सवाद व लेनिनवाद का गहन अध्ययन कर भारतीय समाज के आर्थिक–सामाजिक विश्लेषण के लिए इसका प्रयोग किया। उन्होंने अपने जीवन के मुख्य ध्येय समाजवादी सिद्धान्तों तथा नीति–रीति को स्पष्ट करना, उसकी पृष्ठभूमि में कॉंग्रेस की गतिविधियों की समीक्षा करना, राष्ट्र की विभिन्न आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन कर उसका समाजवादी क्राँतिकारी हल ढूंढना तथा कॉंग्रेस की एकता को अक्षुण्ण बनाये रखते हुए उसे गतिशील तथा राजनीतिक और आर्थिक क्रॉति का उपकरण बनाना निर्धारित किया। आचार्य नरेन्द्रदेव के अनुसार हमारे सामने आने वाले आर्थिक प्रश्न दिन प्रतिदिन गम्भीर होते जा रहे हैं तथा पुरानी सामाजिक व्यवस्था समाज की अधिकतर जनता के जीवन को असम्भव बनाये जा रही है। इस समय यदि कॉंग्रेस देश की समस्याओं को हल करने का दावा करती है, तो उसके लिए आवश्यक है कि एक नयी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का आदर्श छटपटाती हुई जनता के सामने रखे। पुरानी सामाजिक अवस्था, जो अनुपयुक्त हो चुकी है यदि कॉंग्रेस उसी की लीपापोती में लगी रहेगी तो वह भी उस पुरानी व्यवस्था की तरह अनुपयुक्त हो जाएगी। उसका नेतृत्व समाप्त हो जाएगा। इस प्रकार आचार्य जी का स्पष्ट विचार था कि कॉंग्रेस को देश की आजादी के लिए आन्दोलन करने के साथ–साथ इस सम्बन्ध में भी स्पष्ट नीति बनानी चाहिये कि स्वतंत्र भारतीय समाज का स्वरूप क्या होगा। वह किस प्रकार के समाज का निर्माण करना चाहती है। इस सम्बन्ध में उनका कहना था कि यदि कॉंग्रेस का उद्देश्य हमारे राष्ट्र को उसके जीवन के मार्ग में आने वाली बाधाओं से मुक्त कर उसे वास्तव में विकास और जीवन के पथ की ओर ले जाना है जिसमें देश की जनता जीवन का अधिकार पा सके तो यह काम कुछ राजनीतिक नारे ''स्लोगन्स'' की माला जपने से पूर्ण नहीं हो सकता। पूर्ण स्वराज्य, साम्राज्यवाद से आजादी इन सब नारों का तभी कुछ अर्थ हो सकता है जब हमारे सामने अपने समाज का कोई रूप हो जिससे जनता आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र

***पति– राजीव कुमार, ग्राम–मनिकौली, पोस्ट– जटमलपुर तीरा, थाना– कल्याणपुर, जिला–समस्तीपुर (बिहार), पिन–847301**

में आत्मनिर्भर के अधिकार का उपयोग कर सके, कॉंग्रेस किसी ऐसे रचनात्मक कार्यक्रम को देश के सामने प्रोग्राम के तौर पर रखे और हमारे नेताओं के विचार इस विषय में स्पष्ट हों। इसके बिना न तो कॉंग्रेस को और न तो कॉंग्रेस सरकार को ही सफलता मिल सकेगी, उलटे वे अपना प्रभाव खो बैठेंगे।

इस प्रकार आचार्य जी चाहते थे कि स्वतंत्र भारत के लोगों के जीवन को बाधामुक्त बनाने तथा समस्त जनता का इस क्रम में सहयोग प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि समाज का स्वरूप जनता के समक्ष इस प्रकार स्पष्ट हो जिसमें देश के सभी नागरिक अपने सामाजिक–आर्थिक, तथा राजनैतिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन आत्म निर्णय स्वयं ले सकें।

आचार्य नरेन्द्रदेव ने अपनी एक छोटी पुस्तिका 'किसानों का सवाल' में प्रथम महायुद्ध तथा रूस की राज्यक्रॉंति, पूर्वीय देशों में जागृति, संसार व्यापी आर्थिक संकट का कृषि पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन करते हुए बतलाया है कि किस प्रकार भारतवर्ष में किसान आन्दोलन जोड़ पकड़ता गया तथा एक नयी विचार धारा का प्रादुर्भाव हुआ जिससे किसानों में जागृति की लहर दौड़ गयी।

स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु भारत में आर्थिक, सामाजिक तथा बौद्धिक परिस्थितियॉं उत्पन्न हो गयी थीं। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद कल कारखानों के मजदूर काफी सजग हो गये थे, मजदूर संगठन भी देशव्यापी हो चला था। किसान जागृतावस्था में आने लगे थे। किसानों के लिए अपनी दलित तथा दयनीय जीवन स्थिति सह पाना कठिन होता गया था। किसान राष्ट्रीय आन्दोलन में हिस्सा बँटाने लगे थे। कॉंग्रेस के लिए किसानों की आर्थिक मांगों की उपेक्षा कर पाना असम्भव होता जा रहा था, अतः सन् 1931 ई. में कॉंग्रेस ने अपने मौलिक अधिकारों के प्रस्ताव में स्पष्ट कर दिया था कि वह जिस संविधान को स्वीकार करेगी उसमें भूमि सुधारों की, विशेषकर लगान कमी की व्यवस्था होगी या स्वराज्य को इसकी व्यवस्था करने का अधिकार होगा। कॉंग्रेस से जुड़े लोग मार्क्सवाद के अध्ययन की दिशा में उन्मुख हुए। प्रथम सविनय अवज्ञा आन्दोलन के बाद कुछ सत्याग्रहियों, जिनमें सर्व श्री आचार्य नरेन्द्रदेव, जय प्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्द्धन, नाना साहब गोरे, एम, आर. मसानी, के.के. मेनन, अशोक मेहता तथा एम.एल. दान्तवाल प्रमुख थे, ने समाजवादी आन्दोलन की रूपरेखा तैयार की तथा सन् 1934 ई. में पटना के सम्मेलन में समाजवादी दल की स्थापना हुई। यहॉं यह भी उल्लेखनीय है कि कुछ कॉंग्रेसी नेता नाजीवाद की अति राष्ट्रीयता के प्रभाव में आ गये तथा कुछ राष्ट्रीयता के साथ–साथ मार्क्सवाद से भी प्रेरित एवं प्रभावित होने लगे। आचार्य नरेन्द्रदेव राष्ट्रीयता के साथ–साथ मार्क्सवाद के विचारों से भी प्रेरित एवं प्रभावित थे।

आचार्य जी के व्यक्तित्व की विशेषता इस बात में है कि वे जीवन के अन्तिम समय तक अपने विचारों में सामाजिक क्रान्ति के प्रबल समर्थक रहे तथा उनके चिन्तन में प्रतिक्रियावाद के लिए कोई स्थान नहीं है। उनके व्यक्तित्व में मौलिक चिन्तन की क्षमता है तथा वे मार्क्सवादी लेनिनवादी विचारों में नवीन सूत्र जोड़ने की क्षमता रखते हैं। इसीलिये कहा जाता है कि उन्होंने मार्क्सवाद लेनिनवाद को भारतीय संस्कार देने का सत्कार्य किया। आचार्य नरेन्द्रदेव के अनुसार लेनिन ने लिखा है कि मार्क्स के पूरे सिद्धान्त में मुख्य बात यही है कि वह समाजवादी समाज के निर्माता के रूप में सर्वहारा वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका को उभार कर सामने लाता हैं। इस प्रकार मार्क्स के इस प्रतिभा सम्पन्न अन्वेषण ने ही काल्पनिक समाजवाद को वैज्ञानिक धरातल प्रदान किया तथा उसका उज्ज्वल भविष्य उदीयमान क्रान्तिकारी वर्ग के साथ सम्बद्ध हो गया। कल्पनावादी समाजवादी जहॉं सर्वहारा वर्ग को पीड़ित तथा असहाय जनसमूह के रूप में मात्र स्वीकार करते थे, वहॉं मार्क्स ने सर्वहारा या मजदूर वर्ग को एक ऐसी सामाजिक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया जो सम्पूर्ण समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में समर्थ है। वैज्ञानिक साम्यवाद के सम्पूर्ण भवन की आधारशिला सर्वहारा वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका के विचार की शिला पर ही आधारित ही।

आचार्य नरेन्द्रदेव ने मार्क्सवादी आधार पर मानव समाज का विश्लेषण किया है तथा आदिम अवस्था से लेकर समाजवाद तक के सामाजिक विकास की प्रक्रिया पर विचार प्रस्तुत किया है। आचार्य जी ने बतलाया है कि उत्पादन की शक्तियों का विकास होने पर किस प्रकार वर्गों की उत्पति हुई तथा समाज में धनी–निर्धन का भेद प्रकट हो गया। स्वामी और दास, सामन्त और कृषक पूँजीपति और मजदूर या सर्वहारा आदि के वर्गों का विवेचन करते हुए उन्हें भारतीय समाज पर लागू करते हुए उन्होंने लिखा है कि ''यहॉं पर किन–किन स्थानों पर गुलामी की यादगारें भी मिलेंगी, सामन्तशाही जमाने का आर्थिक ढॉंचा दिखायी पड़ेगा और पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली के युग में तो हम रह ही रहे हैं। अतः जब हम किसी युग की बात करते हैं तब हमारा मतलब इस समाज में प्रचलित आर्थिक प्रणाली से होता हैं।'' आचार्य जी ने मार्क्स के सुप्रसिद्ध दास कैपिटल का उद्धरण देते हुए तीन प्रमुख बातों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया हैं, जिन्हें मार्क्स विशेष रूप से रेखांकित करता है। वे अनेक बार मार्क्सवाद के ऐसे व्याख्याता के रूप में प्रकट होते हैं, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि वे भारतीय परिस्थितियों के लिए मार्क्सवादी–लेनिनवादी ढंग पर कोई ऐसी प्रखर समाजवादी विचारधारा प्राप्त करना चाहते हैं जिसे केवल भारत में ही नहीं सम्पूर्ण एशिया में लागू किया जा सके। सच्चे मार्क्सवादी की तरह आचार्य जी यह मानते हैं कि समाज के आर्थिक

ढाँचे में परिवर्तन होने के साथ उसकी मानसिक विचारधारा में भी परिवर्तन होता है। उन्होंने स्वीकार किया कि मार्क्सवाद समाज की प्रगति के नियमों का वैज्ञानिक विवेचन करने वाली एक नयी विचारधारा हैं। उन्हीं के शब्दों में'' मार्क्स की विशेषता यह थी कि उसने अपने साथी एंजेल्स की सहायता से वैज्ञानिक ढंग से नियमों की विवेचना करते हुए उन्हें एक विचार पद्धति में संगठित किया जिसे हृदयंगम करके हम समाज के भूत और वर्तमान इतिहास को समझ सकते हैं तथा भविष्य के लिए अपना कर्तव्य निर्धारित कर सकते हैं।'' आचार्य जी मार्क्स के द्वन्दात्मक भौतिकवाद के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं तथा द्वन्दात्मक भौतिकवाद के स्थान पर भौतिक अद्वैतवाद अथवा पदार्थवादी अद्वैतवाद शब्द का प्रयोग करते हैं।

कार्ल मार्क्स की भाँति आचार्य नरेन्द्रदेव का भी मानना है कि मनुष्य ही इतिहास का सृजन करने वाला सक्रिय कार्यकर्ता है।

आचार्य नरेन्द्रदेव ने मार्क्सवादी सिद्धान्त के आधार पर पूँजीवाद का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि आन्तरिक शक्तियों के परिणाम–स्वरूप किस प्रकार समाज आदिम साम्यवादी युग से आरम्भ होकर आधुनिक युग की पूँजीवादी व्यवस्था तक पहुँचता है। पूँजीवाद को वे श्रम के शोषण पर आधारित एक त्रुटिपूर्ण व्यवस्था मानते हैं। आचार्य जी का कहना है कि ''जिस प्रकार धर्म मानवता को विकृत तथा खण्डित करता है उसी प्रकार उत्पादन की पूँजीवादी प्रक्रिया मानव श्रम के गौरव को नष्ट कर देती है। आचार्य जी उन आधुनिक अर्थशास्त्रियों में इतिहास के ज्ञान की कमी मानते हैं और कहते हैं कि वे कोरे अर्थशास्त्री हैं। अर्थशास्त्र के नियम शाश्वत नहीं है, वे सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। इस सन्दर्भ में मार्क्सवाद की इतिहास की गत्यात्मकता को स्वीकार करते हुए वे कहते हैं कि यदि आर्थिक नियम अटल होते तो सामाजिक तथा आर्थिक विकास की सम्भावना ही न रह पाती। पूँजीवादी राज्य का विवेचन करते हुए आचार्य जी लिखते हैं कि राजनीतिक स्वतंत्रता मानव को स्वतंत्र नहीं करती। वर्तमान सामाजिक प्रणाली पूँजीवादी है। आचार्य जी का मत है कि पूँजीवादी उत्पादन यहाँ मुट्ठी भर पूँजीपतियों में सम्पत्ति को केंद्रित करता है वहाँ वह असंख्य अकिंचन भी पैदा करता है। इस सर्वहारा मजदूर के प्रति सहृदयता दशति हुए वे स्वीकारते हैं कि वर्तमान प्रणाली के दोषों को दूर करने का साधन सर्वहारा मजदूर ही है। यहाँ उनका मत मार्क्सवाद लेनिनवाद के प्रोलेटेरियेट के समान है। आचार्य जी मजदूर वर्ग को समाजवादी क्रान्ति का अग्रदूत मानते हैं उनकी धारणा है कि जिस समाज में उत्कृष्टता की कसौटी धन हो, उसका पतनोन्मुख होना सुनिश्चित हैं।

निष्कर्ष

आचार्य नरेन्द्रदेव ने समाजवादी आन्दोलन या समाजवादी के सिद्धान्तों के आधार पर स्वतंत्र भारत की जनता की आर्थिक समस्याओं के निराकरण के लिए जनता के हाथ में समस्त सत्ता का हस्तान्तरण चाहते थे। वे आर्थिक जीवन के विकास के लिए राज्य द्वारा आयोजन एवं नियंत्रण, दस्तकारियों, जैस–लोहा, कपास, जूट, रेलों, जहाजों, खानों तथा बैकों आदि का राष्ट्रीयकरण करना चाहते थे ताकि उत्पादन, वितरण और विनिमय के समस्त साधनों का उत्तरोतर समाजीकरण सम्भव हो सके। आचार्य की मंशा थी कि आर्थिक जीवन के लिए अंश का समाजीकरण न हो, उसमें विदेशी व्यापार, उत्पादन वितरण और राज्य के एकाधिकार, नरेशों, जमींदारों और अन्य शोषक वर्गो का अन्त करना, भूमि का किसानों में फर्नवितरण करना, सहकारी और सामूहिक कृषि की वृद्धि का समष्टिकरण एवं किसानों और मजदूरों का ऋण रद्द किया जाने का प्रयास शामिल था। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि आचार्य नरेन्द्रदेव ने समाजवाद के सिद्धान्त द्वारा स्वतंत्र भारत के विकास के लिए आर्थिक विचार मूल रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ताकि स्वतंत्र भारत की समुचित आर्थिक समृद्धिकी जा सके।

संदर्भ स्रोत

1. कार्ल मार्क्स, कैपिटल, भो. 1, पृ. 776.
2. मुकुट बिहारी लाल, आचार्य नरेन्द्रदेव–युग और नेतृत्व विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1987, पृ. 482–483.
3. रणधीर सिंह यादव, पूँजीवाद क्या है, पृ. 21.
4. डी. पी. मुक्तजी, संघर्ष नरेन्द्रदेव अं., पृ. 102.
5. डॉ. शोभा शंकर, आधुनिक भारतीय चिंतन का इतिहास, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ. 273.
6. फूलगेन्द्र सिंह, दी प्रजा सोशलिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, अमेरिकन यूनिवर्सिटी अन्न आरवर, मिचिंग, 1968, पृ. 56.
7. आशा गुप्ता, सोशियोलिज्म थ्योरी एंड मधुदंडवते का 24 जनवरी 1985 को दिया गया साक्षात्कार.
8. आचार्य नरेन्द्रदेव, राष्ट्रीयता और समाजवाद, ज्ञानमंडल वाराणसी, 1949, पृ. 262.
9. आचार्य नरेन्द्रदेव, राष्ट्रीयता और समाजवाद, ज्ञानमंडल, वाराणसी, 1949, पृ. 273.